International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 3 Issue 12 || December 2014 || PP 76-82

अपर्णा कौर की कलात्मक अभिव्यक्ति

डॉ0 रवीश कुमार
एसोसिऐट प्रोफेसर, चित्रकला,
महाराजा हरिश्चन्द्र महाविद्यालय,
मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

सारांश
अपर्णा कौर एक ऐसी ही कलाकार हैं जिन्होंने समाज के विभिन्न रूपों को फलक पर उतारा। समाज का हिंसात्मक रूप हो या पीड़ित का दर्द, प्रेम की भावना हो या अध्यात्म का पहलू उनके चित्रों में मानव समाज का हर रूप साकार होता दिखाई देता है। एक स्व–शिक्षित कलाकार होने के बावजूद उनकी कलाकृतियों में कलात्मक सौंदर्य सहज रूप से देखा जा सकता है। उनके चित्रों की कलात्मक शैली अध्यात्म की छाया में फली–फूली, जिस पर पहाड़ी लघु चित्र शैली, मधुबनी शैली, भारतीय लोककला, गोड जनजातीय कला के अतिरिक्त पंजाबी साहित्य का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। उनकी कलात्मक कृतियों में जो संवेदना की झलक परिलक्षित होती है। वह मानव हृदय को विचार मंथन के लिए प्रेरित करती दिखाई देती है। अपर्णा की कलात्मक अभिव्यक्ति अद्‌भुत है। लोककला की छाया है और पहाड़ी लघु चित्र शैली की छलक भी दिखाई देती है। उनकी कलाकृतियों पर दृष्टि डालें तो ऐसा प्रतीत होता है कि यथार्थवादी संसार से प्रेरित होकर वह अतियथार्थवाद का सृजन करती हैं। उनका यह सृजन समाज की अवस्था और रूढ़िवादिता पर एक करारा प्रहार ही कहा जाएगा जिसके लिए वह आज भी निडरता से सृजनरत हैं।

मुख्य शब्द :– *हिंसात्मक, परिदृश्य, अध्यात्म, श्रृंखला, जातिवाद, कर्मकाण्ड, अस्पृश्यता।*

प्रस्तावना :–

यहां जीवन के अनेक पड़ावों को पार करता हुआ मानव–मन उन पड़ावों से इस कदर जुड़ जाता है कि वह चाहते हुए भी खुद को इनसे अलग नहीं कर पाता। वह जीवन के सुख–दुख व आने वाले विभिन्न परिदृश्यों को अभिव्यक्ति प्रदान करना चाहता है और करता भी है, ताकि वह अपने अनुभव में समाएं हुए पलों को समेट सके और दूसरों को भी उन पलों से अवगत करा सके। 4 सितंबर सन् 1954 को नई दिल्ली में जन्म लेने वाली भारतीय कला जगत की चितेरी अपर्णा कौर भी एक ऐसी ही सचेत कलाकार हैं जिन्होंने समाज के विभिन्न रूपों को फलक पर उतारा। समाज का हिंसात्मक रुप हो या पीड़ित का दर्द, प्रेम की भावना हो या अध्यात्म का पहलू उनके चित्रों में मानव समाज का हर रूप साकार होता दिखाई दिया है।

कला के प्रत्येक रूप को उन्होंने खुले दिल से स्वीकार किया है। यह कहना गलत नहीं होगा कि संगीत के मधुर स्वर, साहित्य की कविताएं, नृत्य की मुद्राएं और चित्रों के रंग सभी ने एक साथ मिलकर उनके बचपन को संवारने के साथ ही कला से भी उनका परिचय कराया है। कला के प्रति बचपन से ही उनकी रूचि का परिणाम था कि नौ वर्ष की छोटी सी अवस्था में ही अमृता शेरगिल की कलाकृति से प्रभावित होकर उन्होंने "मदर एंड डॉटर" चित्र तेल रंगों से बना डाला।

शिमला के एक क्रिश्चियन स्कूल से अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज से साहित्य में स्नातकोत्तर की शिक्षा ग्रहण की। इसके साथ ही पेंटिंग प्रदर्शनियों में भी भागीदारी प्रारंभ कर दी। सन 1982 में उन्होंने गढ़ी स्टूडियो में "एचिंग" तकनीक का ज्ञान प्राप्त किया।

उनकी कलात्मकता के विषय में कहा जाए तो वह एक ऐसी कलाकार हैं जिनकी रग–रग में कला समाहित है। एक स्व–शिक्षित कलाकार होने के बावजूद उनकी कलाकृतियों में कलात्मक सौंदर्य सहज रूप से देखा जा सकता है। अपर्णा कौर के चित्रों की कलात्मक शैली अध्यात्म की छाया में फली–फूली; जिस पर पहाड़ी लघु चित्र शैली, मधुबनी शैली, भारतीय लोककला, गोड जनजातीय कला के अतिरिक्त पंजाबी साहित्य का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है।

चित्र सं0 1, समय

आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय चित्रकारों में शामिल अपर्णा कौर पंजाबी परिवार से होने के कारण पंजाबी धर्म व संस्कृति का भी वहन करती हैं। उनके अनेक चित्र पंजाबी पृष्ठभूमि की छाया में बनें हैं। उन्होंने सिख गुरुओं और आध्यात्मिकता को अपनी कला का आधार बनाकर अपनी आध्यात्मिक विचारधारा को कला के माध्यम से अभिव्यक्त किया। अपर्णा कौर ने अध्यात्म के साथ ही पौराणिक कथाओं को तो पेंटिंग के द्वारा प्रस्तुत किया ही इसके अतिरिक्त समाज की मानवीय दशा, उनकी पीड़ा, हिंसात्मक रवैया, पर्यावरण से जुड़े मुद्दों को भी कला के द्वारा प्रस्तुत किया है।

अपर्णा कौर ने मुख्यतः समाज में महिलाओं की दशा को अभिव्यक्ति प्रदान की है। पुलिस द्वारा उत्पीड़न और बलात्कार की शिकार माया त्यागी के हिंसात्मक सामाजिक मुद्दे पर सवाल उठाती उनकी चित्र श्रृंखला "रक्षक ही भक्षक" इस बात की गवाही देती है कि वह निडरता के साथ अपनी बात रखने वाली चितेरी हैं, उनकी यह श्रृंखला नारी व गरीबों की रक्षक समझी जाने वाली पुलिसकर्मियों पर एक करारा प्रहार ही था। पुलिस के रक्षक रूप के पीछे छिपे भक्षक रूप को समाज के सामने उजागर करने का प्रयास करती उनकी कलाकृतियां कलात्मक सौंदर्य का ही प्रदर्शन नहीं करती, बल्कि कलाकार की निडरतापूर्वक अभिव्यक्ति को भी प्रदर्शित करती है।

उनकी 'समय' चित्र श्रृंखला ऐसी ही निडरतापूर्ण अभिव्यक्ति का परिणाम थी, जो वृन्दावन की पृष्ठभूमि पर निर्मित की गई है, जिसमें विधवाओं की दारुण दशा की अभिव्यक्ति करके एक और सामाजिक मुद्दे को समाज के रूबरू कराया गया है। यह श्रृंखला उन महिलाओं के दर्द को उजागर करती है जिन्हें उनके संबंधी, पति की मृत्यु के पश्चात् संपत्ति से वंचित कर गुमनाम और अथाह दुखःमय जीवन जीने के लिए वृंदावन छोड़ दिया जाता था।(देखिए चित्र सं0 1, समय)

बाल्यावस्था में अपर्णा ने अपनी माँ को हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए परमाणु बम ब्लास्ट में मारे गए लोगों के लिए प्रार्थना करते हुए देखा है, जिसकी अमिट छाप उनके मस्तिष्क पर छायी हुई थी। इस नर संहार के प्रति उनके हृदय में जिस संवेदनशीलता ने जन्म लिया उसके प्रतिफल का नतीजा उनकी कला रचना में देखा जा सकता है। उनके द्वारा निर्मित यह मार्मिक कलात्मक दृश्य सृजन विश्व शांति आन्दोलन की धरोहर के रूप में आज भी कायम है। हिरोशिमा और नागासाकी पर हुई बमबारी की 50 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में सन 1994 में "हिरोशिमा म्यूजियम ऑफ मॉडर्न आर्ट" द्वारा अपर्णा कौर को जो म्यूरल बनाने का कार्य मिला था इसके लिए उन्हें 7 लाख की धनराशि भी पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गई थी।

कला के प्रति उनके प्रेम का ही परिणाम था कि मात्र 21 वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने अपना पहला एकल प्रदर्शन किया। यह सत्य है कि उस वक्त उन्हें इस प्रदर्शन से निराशा ही मिली, परन्तु इससे उनके कदम थमे नहीं, बल्कि आगे बढ़ने के लिए प्रेरित हुए। जिसका परिणाम उन्हें 1981 में "लापता दर्शक" की सफल प्रदर्शनी के रूप में प्राप्त हुआ।

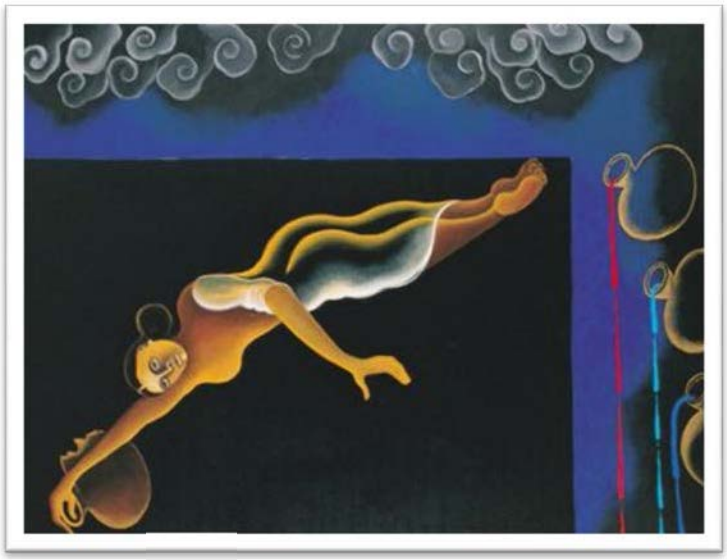

चित्र सं0 2, सोहनी

उनकी कलात्मक कृतियों में जो संवेदना की झलक परिलक्षित होती है। वह मानव हृदय को विचार मंथन के लिए प्रेरित करती दिखाई देती है। उनका कलात्मक रूप लोक कला के सानिध्य में भी पनपा है। मुख्यतः मधुबनी लोक कला शैली की झलक उनकी रचनाओं में देखी जा सकती है, परन्तु विशेष रूप से पंजाबी पन और पंजाब की झलकियां उनकी कलाकृतियों के केंद्र में दिखाई पड़ती है। अध्यात्म का ज्ञान हो या नारी का प्रेम, पीड़ा या फिर संवेदना, पंजाबी पन कहीं न कहीं दिख ही जाता है। नारी को विभिन्न रूपों का प्रतिकात्मक रूप मानते हुए उन्होंने सोहनी महिवाल नामक एक श्रृंखला भी तैयार की है। यहां नारी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ लड़ती हुई व संघर्ष करती हुई दिखाई गई है, जो उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करती है जो समाज द्वारा प्रताड़ित किया जाता है। वह अपने हक की आवाज उठाने का प्रयास करती है। "सोहनी' नामक यह चित्र श्रृंखला सोहनी–महिवाल की अमर प्रेम गाथा का सहज स्मरण करा देती है, जिसमें कच्चे घड़े के सहारे नदी पार करते हुए वह मौत की आकोश में समां गई थी। (देखिए चित्र सं0 2, सोहनी)

अपर्णा कौर ने इस श्रृंखला में कहीं सोहनी को घड़े के साथ पानी में तैरते हुए दिखाया है तो कहीं पर घड़े में सोहनी व महिवाल के पैर को चित्रित किया गया है। उनकी कला ने अध्यात्म के साथ ही अमूर्तन को भी स्पर्श किया है। "द लीजेन्ड ऑफ सोहनी" श्रृंखला की चित्राकृतियॉ केवल आध्यात्मिक नहीं हैं। इनमें एक समकालीनता भी है।[1] यहां मूल रूप से एक कलाकार ने जीवन के संघर्ष को चित्रित कर समाज की कुरूतियों पर ही पलटवार किया है।

चित्र सं0 3, कबीर

वास्तव में देखा जाए तो इस श्रृंखला के निर्माण के पीछे समाज में प्रेम की स्थापना करना ही उनका उद्देश्य है। उनका मानना है "मानव की आध्यात्मिक दरिद्रता को सिर्फ प्रेम ही दूर करने में सक्षम है। मानव भौतिक प्रेम के द्वारा आध्यात्मिक प्रेम के आदर्श को छू सकता है। यह प्रेम व्यक्तिवाद के दायरे को तोड़कर सबको गले लगाता है।[2]

एक नारी होने के नाते उन्होंने नारी समाज की विभिन्न दशाओं का चित्रण अपनी कलाकृतियों में किया है, परन्तु इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं कि उन्होंने समाज के सिर्फ नारी पहलू को ही केनवास पर उतारा, बल्कि उन्होंने समाज के विभिन्न पहलुओं को छूने का प्रयास किया है। वह अपने चित्रों के विषय में चर्चा करते हुए स्वयं कहती हैं–"आज की महिला कलाकारों का काम किसी भी अर्थ में पुरूषों से पीछे नहीं है। वह जीवन के विभिन्न पहलुओं को अपनी कला का विषय बनाती हैं। खुद मैंने हिरोशिमा, पर्यावरण, बुद्ध, नानक, कबीर, समय, जीवन, मृत्यु, वृद्धावस्था सहित अनेक विषयों पर काम किया है।"[3]

अपर्णा के चित्रों पर दृष्टि डालने पर स्पष्ट हो जाता है कि उनका कला कर्म यथार्थवादी संसार की प्रतिछाया का ही चित्रण है। माया त्यागी रेप केस हो या सोनी–महिवाल श्रृंखला, वृंदावन की विधवाओं की दशा हो या परमाणु विस्फोट का दर्दनाक दृश्य उन्होंने अपनी कला में समाज के ही रूप को प्रदर्शित किया है। अध्यात्म भी समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिससे एक कलाकार चाहते हुए भी नहीं छोड़ सकता। फिर वह तो एक पंजाबी कलाकार हैं, यही कारण है कि उन्होंने इस धर्म की आध्यात्मिकता को भी कला में शिरमोर रखा है। सिख गुरूओं का चित्रण उनकी कलात्मकता में चार चांद लगाने का काम करता है। 1984 के दंगों को फलक पर उतारने के साथ–साथ ही वह "नानक देख रहा है" में धार्मिक भावनाओं को समेट रही है। उनका मानना है कि दंगों जैसे दारुण व हिंसात्मक वातावरण नानक को भी विचलित कर सकता है और कबीर को भी। समाज के परिदृश्य में कबीर, नानक और बुद्ध वह नाम है जो बंधुत्व की भावना का प्रचार करते हैं। धर्म और पाखंड के फेर से समाज को बचाने का पूर्ण प्रयास करते हैं। "धर्म" अपर्णा कौर को प्रभावित करता है, उनके अनुसार "धर्म" का अर्थ है– "खुलापन, दर्शन, कविता, सौन्दर्य और धर्मनिरपेक्षता।"[4]

चित्र सं0 4, नानक श्रृंखला

'अपर्णा के लिए गुरुग्रंथ साहिब की कविता का केंद्रीय महत्त्व है। यह कविता प्रेम के बारे में बात करती हैं। कबीर, जयदेव, शेख फरीद, नामदेव, रामानंद, बेनी, रविदास, धन्ना, पीपा, सूरदास, मीरा, गुरु नानक देव, गुरु अर्जुन देव, भाई मरदाना सब एक साथ हैं इस ग्रंथ में।'[5] इसी एकता का ही परिणाम निकलता है 'प्रेम', 'अपनत्व' और 'करुणा' का हृदय में संचार। कबीर और नानक आदि का ज्ञान और एकत्व की भावना, सूर और मीरा का प्रेम अपर्णा को इस कदर प्रभावित करते हैं कि उनकी कलाकृतियों में यह भाव स्पष्ट दिखाई दे जाते हैं। उनके सृजन में दर्द, पीड़ा, प्रेम, संघर्ष सबके सहज ही दर्शन हो जाते हैं। 'अपर्णा ने 1993 में कबीर पर अपनी एक चर्चित चित्र श्रृंखला बनाई थी–'बॉडी इज जस्ट ए गार्मेंट'। इस श्रृंखला में 33 चित्र थे और टेराकोटा में पांच इंस्टालेशन थे।'[6] (देखिए चित्र सं0 3, कबीर)

अपर्णा कौर ने अपनी कला रचनाओं में कबीर और नानक दोनों ही धार्मिक गुरुओं को चित्रित करके उनकी विचारधारा को व्यक्त करने के साथ–साथ यह भी दर्शाने का प्रयास किया है कि समाज की हिसंकवृत्ति भावना साधारण मानव मन को ही नहीं बल्कि कबीर और नानक जैसी धार्मिक विभूतियों को भी उदास कर रही है जिससे वह खुद को आंसू बहाने से रोक नहीं पा रहे हैं।

अपर्णा की आकृतियां मानवतावादी हैं। ऐसा प्रतीत होता है वह अपनी कला रचनाओं में आम आदमी के विचारों का ही संचयन करती हैं। वह स्वयं इस बात को स्वीकार करती हैं कि नानक श्रृंखला के दौरान भी वह उनके मानवतावादी अध्यात्म से प्रेरित थीं। उन्हीं के शब्दों में कहें तो "नानक श्रृंखला को चित्रित करते समय मैं धार्मिक भावना से अनुप्राणित नहीं थी, बल्कि 'नानक' के हितकारी मानवतावादी अध्यात्म से प्रभावित थी। वे पहले ऐसे समाज सुधारक थे

जिन्होंने स्त्रियों के सामाजिक एवं पारिवारिक शोषण का खुल कर प्रतिवाद किया था। जातिवाद, कर्मकाण्ड, अस्पृश्यता इत्यादि को वे आध्यात्मिक पाप मानते थे। उनके इन्हीं सरोकारों ने मुझे 'नानक श्रृंखला' करने के लिए प्रेरित किया।"[7] (देखिए चित्र सं0 4, नानक श्रृंखला)

उनके नानक नृत्य भी करते हैं। वह ईश्वर के प्रेम में न केवल गीतों को गाते हैं, बल्कि भक्ति भावना में डूबकर नृत्य भी करने लगते हैं। हालांकि उनकी इस कल्पनाशील अभिव्यक्ति को कुछ लोगों की आलोचना भी मिली, परन्तु उनकी यह श्रृंखला एक कलाकार की कल्पना शक्ति का ही परिचायक है, जो भावनाओं से परिपूर्ण है।

अपर्णा की कलात्मक अभिव्यक्ति अद्भुत है। लोककला की भी छाया है और पहाड़ी लघु चित्र शैली की छलक भी दिखाई देती है। प्रसिद्ध चित्रकार व कला समीक्षक प्राण नाथ मागो उनकी चित्र संरचना के विषय में लिखते हैं– "She structures her composition using some typical charac teristics of Pahari miniatures: the rounded figures, the curved horizon, the division of the background into sky, earth and water; and the creation of many centres of activity in the pictorial format for expressing a multiplicity of ideas."[8]

चित्र सं0 5, "द ग्रेट डिपार्चर"

उनकी चित्रशैली का विकास भले ही लघु चित्र शैलियों से हुआ हो और उनकी कला पर पहाड़ी शैली का प्रभाव ही क्यों न हो; परन्तु वह एक ऐसी कलाकार हैं जिसकी कला भाषा नवीनता व मौलिकता के साथ विकसित हुई है। उनके द्वारा निर्मित बुद्ध और समय श्रृंखला ऐसी ही कला रचनाएं हैं जिनमें नवीनता तो है ही साथ ही रहस्यमय भाव भी समाहित है। "द ग्रेट डिपार्चर" (देखिए चित्र सं0 5) बुद्ध की रहस्यात्मक छवि का ही प्रस्तुतिकरण कहा जा सकता है। अपर्णा ने यहां बुद्ध को निमिलित आंखों के साथ दर्शाया है। चित्र में प्रस्थान क्षण को बहुत ही खूबसूरती के साथ प्रस्तुत किया गया है। दार्शनिक अवधारणा को व्यक्त करते बुद्ध ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे वह सृष्टि के रचना कर्म और संहार के साक्षी हों। राजेश कुमार शुक्ला उनकी आध्यात्मिकता के संदर्भ में कहते हैं "कृष्ण बैकग्राउंड में बुद्ध की ध्यानस्थ छवि ऐसी लगती है मानों वह समाधिस्थ हैं, स्थविर हो गई है लेकिन उसकी स्वरूप अवस्थिति समय में ही है। अपर्णा का 'समय' एक अनुभवेतर सत्य है, आकाश की तरह विभु है जिसमें सब कुछ घटित होता है।"[9]

चित्र सं0 6, दिन और रात

'प्रतीकात्मकता की छवि को समेटे उनकी, कलाकृतियां जीवन के स्वरूप का ही प्रस्तुतिकरण करती हैं प्रतीक के रूप में उन्होंने मुख्य रूप से कैंची का चुनाव किया है। यह कैंची हमें भाग्य, किस्मत की पुरातन देवी का स्मरण कराती है, जो समय आने पर जीवन के धागे को भी काट देती है।'[10] वह अपने कला चित्रण में 1988 से कैंची का प्रयोग कर रही हैं। इसके पीछे उनका उद्देश्य सिर्फ इतना है कि वह आम जन जीवन में इसकी महत्ता और प्रयोग दोनों को ही प्रस्तुत करना चाहती हैं। कैंची जैसे प्रतीक का प्रयोग उन्होंने इतनी बहुतायत से किया है कि 'भवेश चन्द्र सान्याल' ने उन्हें ही कैंची नाम से सम्बोधित करना प्रारंभ कर दिया। इसी प्रतीकात्मक कैंची का प्रयोग करते हुए उन्होंने बेहद खूबसूरती से तैल रंगों द्वारा 'दिन और रात' के चक्र को नारी मानवाकृतियों के माध्यम से दिखाया है। जहां रात और दिन को जोड़ने वाले धागों को कैंची काट रही है तथा समय को बदल रही है। दिन रात की यह गति काली पृष्ठभूमि पर प्रदर्शित की गई है।(देखिए चित्र सं0 6, दिन और रात)

अपर्णा कौर की सौन्दर्यात्मक आध्यात्मिक कलाकृतियों को देख कर ही संभवतः प्राणनाथ मागो ने अपनी पुस्तक "कंटेम्परेरी आर्ट इन इंडिया; ए पर्सपेक्टिव" में कहा है कि "उनकी रचनाएँ सौंदर्यशास्त्र के साथ–साथ दार्शनिकों की खोज के लिए एक अवसर प्रदान करती हैं। (Her works provide a scope for discovering the aesthetic as well as the philosophical to the discerning).[11]

अपर्णा ने 'वर्ल्ड गोज ऑन', 'बॉडी इज जस्ट ए गार्मेंट', 'नानक', 'टाइम', 'सोहनी', 'विडोज ऑफ वृंदावन', 'बुद्ध' और 'समय' आदि चित्र श्रृंखलाओं का निर्माण किया, जिनमें वर्तमान परिवेश की स्थिति भी स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। इसके अतिरिक्त उनके अनेक चित्रों में भी सामाजिक पहलू के दर्शन हो जाते हैं। जिनमें प्रमुख हैंः– 'निर्भया', 'रक्षक ही भक्षक', 'द चाइल्ड गॉड्स', 'सिक्ख दंग', 'व्हेयर ऑल दीज', 'हार्वेस्ट', 'स्विमर', 'योगी', 'थ्रेटेड सिटी', 'कनेक्शन', 'ट्री ऑफ सफरिंग', 'ट्री ऑफ लाइफ', 'ट्री ऑफ इनलाइटमेंट', 'योगिनी' आदि। उनकी लगभग सभी कला रचनाओं में समाज का ही प्रदर्शन देखने को मिलता है।

निष्कर्षः–

अपर्णा ने जिस खूबसूरती से सामाजिक विषयों और आध्यात्मिक पहलुओं को अपनी तूलिका से कैनवास पर उतारा वह कलात्मक सौन्दर्य की दृष्टि से उत्कृष्ट श्रेणी में आता है। यहां भले ही अलंकारिकता का अभाव हो परन्तु सौन्दर्य व भावात्मकता भरपूर है। सपाट धरातल पर रंगों की सफलता पूर्वक संयोजन उनकी सूझ–बूझ का ही परिणाम है। अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करके उन्होंने हल्के रंग की मानवाकृतियों को गहरे धरातल पर प्रदर्शित किया है। यह मानवाकृतियां कहीं ध्यान मग्न अवस्था में हैं तो कहीं धरातल में उड़ती हुई दिखाई गई हैं। कहीं–कहीं इनकी मानवाकृतियां धड़, पैर तथा हाथ से अलग है, परन्तु फिर भी वह एक पूर्ण आकृति का निर्माण करती हैं। उनकी बीच में से कटी हुई आकृतियां सहृदय को कम से कम एक बार तो सोचने पर विवश कर ही देती है। उनकी मानवाकृतियां आनुपातिक हैं। अपर्णा ने अपनी रचनाओं में ज्यामितीय वस्तुओं परकार, चॉदा, स्केल, आदि को तो स्थान दिया ही है इसके अतिरिक्त मानवाकृतियों के साथ पानी, बादल और धागों का भी अंकन किया है। उनकी कला रचनाओं में कैंची और धागे का प्रयोग तो बहुतायत से हुआ है। उनकी कलाकृतियों पर दृष्टि डालें तो ऐसा प्रतीत होता है कि यथार्थवादी

संसार से प्रेरित होकर वह अतियथार्थवाद का सृजन करती हैं। उनका यह सृजन समाज की अवस्था और रूढ़िवादिता पर एक करारा प्रहार ही कहा जाएगा जिसके लिए वह आज भी निडरता से सृजनरत हैं।

चित्र सं0 7, अपर्णा कौर की कुछ अन्य कृतियां

सन्दर्भ :–

1. समकालीन कला; अंक 27; राजेश कुमार शुक्ला के लेखः– अपर्णा की आध्यात्मिकता; पृ०–45।
2. वही, पृ०–45।
3. सहारा समय; रंगसुरताल के अंतर्गत, 10 जुलाई 2004 को प्रकाशित, वेदप्रकाश भारद्वाज के लेख– 'कितने कैनवस पीछे चितेरियां।'
4. सहारा समय; रंगसुरताल के अंतर्गत 11 सितंबर 2004 को प्रकाशित "विनोद भारद्वाज" के लेख– 'सिर धर तली गली मेरे आओ'।
5. वृहद आधुनिक कला कोश; विनोद भारद्वाज; पृ०–222
6. वही, पृ०–222
7. समकालीन कला अंक 27, राजेश कुमार शुक्ला के लेखः– अपर्णा की आध्यात्मिकता; पृ०–46।
8. Contemporary art in India, A perspective; Pran Nath Mago, Page-180
9. समकालीन कला; अंक 27; राजेश कुमार शुक्ला के लेखः– अपर्णा की आध्यात्मिकता; पृ०–47
10. भारत संदर्श, खंड 24, अंक 6/2010; संपादक– नवदीप सूरी; पृ०–48
11. Contemporary art in India, A perspective; Pran Nath Mago, Page-180

नोट :– समस्त चित्र गुगल से, केवल लेख के भावार्थ को समझने हेतु लिए गये हैं।